SCIENTIFIC RESEARCH
&
NEW WORLD

~ Editor ~

DR. RAJESH CHOURASIA
Principal
Rani Durgawati Govt.P.G. College,
Mandla (M.P.)

PUBLISHED BY
AJAY BOOK SERVICE
4658A/21, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi – 110002 (INDIA)
Ph : 011-23287655, 011-41500196
Website : www.ajaybookservice.com
E-Mail : asagarbh@yahoo.com

First Edition 2022

Price : 1530/-

ISBN : 978-93-81794-31-9

Size: 5.5” x 8.5”

All rights reserved No. Part of this Publication may be Reproduced, Stored in a retrieval Systems, or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, recording without the prior permission of Publishers.

Laser Type Setting By:
Ramisha Computer & Printers
922, Jatwara Darya Ganj, Delhi-110002

H.S. Offset Printers
New Delhi – 110002

INDEX

S.No.	Title	Page No.
1.	Level And Trends Of Irish Culture And Politics : A Study Of W.B. Yeats's Selected Poems From The Wild Swans At Coole (1919) **Dr. Anita Jhariya**	1
2.	Ecology And Enzyme Based Biosensors **Dr. Seema Dhurvey**	9
3.	Biodiversity And Water Quality Assessment Of Narmata River At Mandla Town (Madhya Pradesh) **Dr. Zoodik Kujoor**	14
4.	अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण **डॉ. एस. पी. धूमकेती**	19
5.	संस्कृत नाट्य में लोकाचार का 'मृच्छकटिकम्' नाटक के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन **डॉ. पी. एल. झारिया**	24
6.	Level And Treands Of The Need For Studying Political Science **Dr. T.P. Mishra**	30
7.	Commercial Development And Trends Of Foreign Direct Investment In India **Dr. Arjun Singh Baghel**	37
8.	Commercial Development And Challenges Faced By Women Entrepreneurs In India **Dr. Shrikant Shrivastava**	47

9.	सामाजिक पर्यावरण एंव जनजातीय समाज की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन **डॉ. श्रीमति नसीम बानो**	54
10.	Ecology Isolation And Identification Of Endophytic Fungi From Some Important Medicinal Plants Of Jabalpur, Madhay Pradesh **Dr. B.L. Jhariya**	63
11.	विदेशी आर्थिक सहायता विकासशील देशों में विदेशी आर्थिक सहायता एवं प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का गरीबी पर प्रभावों का विश्लेषण (भारत वर्ष के विशेष संदर्भ में) **डॉ. अर्जुन सिंग बघेल**	70
12.	हिन्दी साहित्य में साहित्य में व्यंग्य की भूमिका **डॉ. नवीन टेकाम**	81
13.	Level And Trends Of Land Use Pattren Of Madhya Pradesh **Dr. Bhuneshwar Tembhare**	86
14.	सुमित्रानंदन पन्त और प्रकृति चित्रण : एक अध्ययन **डॉ. सिया शरण ज्योतिषी**	92

अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. एस. पी. धूमकेती
हिन्दी विभाग
रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मण्डला (म.प्र.)

प्रस्तुत शोधपत्र में अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। हिन्दी साहित्य के दोनों ही वरिष्ठ उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में पुरुष वर्ग द्वारा स्त्रियों पर किए गए अत्याचारों और उन पर किए गए विविध प्रकार के शोषण का.बड़े ही हृद्य भेदक ढंग से चित्रण किया है। नारी शोषण का चित्रण श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अपेक्षाकृत कम हुआ है, जबकि अमृतलाल नागर के उपन्यासों में इस गंभीर समस्या का विस्तार से चित्रण किया गया है, जो तत्कालीन समय और समाज की सच्चाई के साथ ही नारी शोषण के विशेष संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा रहा है। नारी हमारे समाज में सबसे अधिक पीड़ित एवं प्रताड़ित की जाती है, जिससे समाज में नारी शोषण जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से हमारा ध्यान इनकी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। जिनमें अमृतलाल नागर एवं श्रीलाल शुक्ल का नाम सर्वश्रेष्ट आता है। जहाँ अमृतलाल नागर ने लगभग अपने सभी उपन्यासों में नारी शोषण का चित्रण किया है, वहीं श्रीलाल शुक्ल ने भी अपने कई उपन्यासों में इस समस्या को प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समाज में भी नारी की स्थिति दयनीय ही है। पुरुष का नारी के प्रति यही दृष्टिकोण रहा है कि नारी उसकी संपत्ति है और इस संपत्ति का इच्छानुसार उपयोग करना पुरुष का जन्मसिद्ध अधिकार है। अमृतलाल

नागर के भूख उपन्यास में शीबू नामक पात्र है, जो स्त्री को केवल अपनी संपत्ति समझता है। उसका कहना है, ”पत्नी पति की मिल्कियत है और इसीलिए कुदरतन उसे सर्वाधिकार प्राप्त है। बच्चा अपने खिलौने को जैसे जी चाहे खेले, उसे तोड़ भी डाले– इसमें खिलौने को शिकायत क्यों हो। १) भूख उपन्यास की सम्पूर्ण कहानी भूख से छटपटाती आम जनता की कथा तो है ही, साथ ही इसमें नारी की विवषताओं के चित्र भी देखने को मिलते हैं। अकाल के कारण कई स्त्रियों को वेश्या बनना पड़ता है, उनको अपनी इज्जत से हाथ धोना पड़ाता है। धन के मोह में नुरुद्दीन अपने साथियों के साथ मिलकर भूखी और लाचार स्त्रियों का व्यापार करते हैं। ‘‘दो मुट्ठी चावल के लिए औरतें बेची जाने लगी। बुढ़ियों को धर्मशाला में दीन–धर्म के उपदेश सुनने के लिए भरती नहीं किया जाता था। धर्मशाला का रहस्य मालूम हो गया, पर औरतों की अस्मत जाय तो जाय–खाने को मिले। बहु–बेटियों को वेश्या बनने दो। आबरू जाती है, तो जाने दो। पेट से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं। बेचो! बेचो!

इस उपन्यास में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति समान थी। थोड़े से चावल के लिए स्त्रियों को एक मालिक से दूसरे मालिक के हाथों बिकना पड़ता है। शीबू की बहन तुलसी भी भूख से बचने के लिए नुरुद्दीन के हाथों ही बिकना पसंद करती है। इस उपन्यास में केवल तुलसी ही नहीं, अपितु सभी मध्यवर्गीय परिवारों की बेटियाँ इसी तरह बिकने के लिए विवश हो जाती हैं। उदाहरण– ‘‘आबरू नाम की कोई चीज इस वक्त तक उनके साथ नहीं रह गई थी। उनकी बहु–बेटियाँ भी खुले आम धर्मशालाओं और अनाथालयों में भेची जाने लगी थी। आलोच्य उपन्यास का नायक पांचू गोपाल’ स्त्रियों की दयनीय दशा को देखकर कहता है, ”उन्हें भी कहने का हक है, उन्हें भी जीने का हक है। पुरुष इस हद तक स्त्री को अपनी दासी बनाकर नहीं दबासकता। आगे वह कहता है– ‘‘हमें सबका समान अधिकार स्वीकार करना ही होगा। जब तक एक भी स्त्री दासी रहेगी, उसके पेट से दास ही उत्पन्न होंगे। दासता जीवन को मृत्यु की जड़ता से बांध देती है। यह अकाल हमारी दासता का परिणाम है। यह अकाल मनुष्य की दासता का परिणाम है।’’

बूंद और समुद्रउपन्यास में भी नारी शोषण का चित्रण किया है। इस उपन्यास में नारी की सामाजिक–आर्थिक स्वतंत्रता एवं नारी–पुरुष के

समान अधिकारों का प्रश्न उठाया गया है। इस उपन्यास की पात्र 'वनकन्या' समाज में स्त्री–पुरुष की समानता एवं स्त्री की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करती है। वह उन सब नैतिक मूल्यों और सामाजिक धारणाओं का विरोध करती है, जो नारी के उज्ज्वल भविष्य में बाधक बनते हैं। उसका कहना है– "हमें अब झूठे धर्म का भय, और झूठी आबरू का मायाजाल तोड़ कर कहना भी होगा, और लड़ना भी होगा। आर्थिक पराधीनता के कारण आज के मध्यवर्गीय समाज में नारी कहीं आत्महत्या करने पर विवश होती है, तो कहीं मानसिक क्लेश सहने को मजबूर होती है। वनकन्य' के अनुसार– ''स्त्री और पुरुष आमतौर पर एक दूसरे की इज्जत नहीं करते हैं। स्त्री आमतौर पर आर्थिक दृष्टि से पुरुष की आश्रिता है, उसका व्यक्तित्व स्वतंत्र नहीं। इस देश की स्त्रियाँ सदा से यह दुःख भार उठाती आई हैं। सीता को भी सहना पड़ा था, द्रौपदी को भी। वर्तमान समाज में नारी पर हुए अत्याचारों एवं शोषण को देखते हुए उपन्यासकार स्वयं कहते हैं– ''नारी होना आज की सामाजिक स्थिति में अभिशाप है।

हमारे समाज में नारी हर समय व्यवस्था की रूढ़ियों का शिकार होती रहती है। उसके प्रति अत्याचार एवं दुराचार हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। वर्तमान समाज में नारी की स्थिति पर इसी उपन्यास का एक अन्यपात्र महिपाल कहता है "मौजूदा समाज में नारी की एक अजीब सामाजिक स्थिति है। खासतौर से हमारे देश में तो यह विचित्रता और भी स्पष्ट होकर झलकती है। हम देखते हैं कि औरत इस समय आम घरों में, किसी न किसी रूप में बेइज्जती का जीवन बिताती है। छोटे आदमी कहलाने वाले को कौन कहे, बड़े–बड़े सभ्य रईसों और पंडितों के घरों में भी स्त्री–जाति का दमन होता है, तरह–तरह से उनका अपमान होता है। आम–जहनियत में स्त्री घर का काम–काज, सबकी सेवा टहल करने वाली और पुरुष के भोग की वस्तु होने के अलावा और कुछ भी नहीं।

'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में भी नागर जी ने नारी शोषण का चित्रण किया है। इस उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर विभिन्न पात्रों द्वारा नारी की सामाजिक स्थिति को उद्घाटित किया गया है। उपन्यास की नायिका 'निर्गनिया' के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है। नारी जीवन की विडम्बनाओं के संबंध में

निर्गुनिया कहती है, ''बाबूजी, मैं पक्ष लेकर बात नहीं करती, पर यह सच है कि दुनिया में दूर–दूर देशों तक, औरतों से बढ़कर और कोई भी ज्यादा गुलाम नहीं है। मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा। मरद सब जगह एक है।

अमृतलाल नागर की भांति श्रीलाल शुक्ल ने भी नारी जीवन की पीड़ा एवं उस पर हुए शोषण का वर्णन अपने उपन्यासों में किया है। सूनी घाटी का सूरज उपन्यास में उन्होंने गाँव की महिलाओं की ऐसी स्थिति का वर्णन किया है, जो चोरी करने में भी अपना सुख पाने का प्रयास करती हैं। जैसेदृ "सासों के डर से चुराकर वे घी–दूध व शक्कर खा सकती है। पति से बचाकर घर का अनाज बेच सकती हैं। घर की चहारदीवारी में बंद रहकर चौबीसों घंटे गंदे लड़कों को खिलने में, खाना पकाने और बर्तन मलने में, अनाज की लूट–पीस में सारा दिन बिताने के बाद अपनी ऊब और घुटन मिटाने का उनका यही साधन है। इससे पैसा मिलता है, स्वास्थ्यवर्धक प्रसन्नता आती है। इसी उपन्यास में ठाकुर राजेश्वर सिंह की पुत्री 'बेबी' का शोषण उसके ड्राइवर 'फिलिप' द्वारा किया है। वह उसे प्रेम का झांसा देकर शारीरिक शोषण करता है। फिलिप उसे अपनी बाँहों में समेटे हुए धीरे–धीरे कह रहा था, "यह सातवाँ तरीका है। तुम्हारे ओंठ पार्टनर के ओठों पर क्रास बनाते हुए मिलें. –– इस तरह, स्टाइल नंबर सेवेन। श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्याओं में नारी के जिस रुप का चित्रण किया है, वह अहंग्रस्त है। वह अपनी पीड़ा एवं दुःख को मन ही मन सहन करती है, जिससे वह कुंठा, तनाव एवं घुटन की शिकार हो जाती है। शुक्लजी ने सीमाएँ टूटती हैं' उपन्यास में जूली नामक एक स्त्री पात्र पारिवारिक कठिनाइयों तथा गरीबी के कारण शोषण का शिकार हो जाती है। वह एक अंग्रेजी दुकान पर टाइपिस्ट का काम करती थी। उन दिनों घर में कई दिक्कतें थीं निकम्मा भाई,शाराबी बाप बीमार माँ आमदनी बढ़ाने के लिए उसने खास–खास ग्राहकों से मिलना शुरू किया। वे दिल्ली या चंडीगढ़ की ओर से आते थे और उन्हें ज्यादातर अंग्रेजी बोलने वाली ईसाई लडकियाँ पसंद थीं।

''राग दरबारी'' उपन्यास में भी स्त्री उत्पीड़न का वर्णन किया गया है, जिसमें दिखाया यह गया है कि पुरुषों की दृष्टि में स्त्री का कोई महत्त्व एवं मूल्य नहीं है। इस उपन्यास की पात्र बेला की असहाय स्थिति का

चित्रण तब होता है, जब गयादीन वै।जी के दरबार में उसकी इज्जत के लिए गिडगिडाता है। यथा– गयादीन ने हाथ जोड़कर गिडगिडाते हुए कहा, महाराज मेरी बनी हुई बात न बिगाड़ो। मेरी बिटिया पर ऐसे ही क्या कम मुसीबतें हैं। माँ बचपन ही में मर गई थी। किसी तरह पाल–पोसकर बड़ा किया है। शहर में अग्रवाल वैश्यों का एक परिवार है। वे लोग इसका उद्धार करने को तैयार है। लड़का पढ़ा–लिखा, नौकरी में लगा है। पंद्रह दिन बाद की ब्याह की तिथि है। अब इस बीच में तुम सब बड़े आदमी अगर झूठमूठ उसकी बदनामी करने लगेंगे, तो उसका क्या होगा महाराज।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि अमृतलाल नागर और श्रीलाल शुक्ल जैसे उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में पुरुष वर्ग द्वारा स्त्रियों पर किए गए अत्याचारों और उन पर किए गए विविध प्रकार के शोषण का बड़े ही हृद्य भेदक ढंग से चित्रण किया है। नारी शोषण का चित्रण श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अपेक्षाकृत कम हुआ है, जबकि अमृतलाल नागर के उपन्यासों में इस गंभीर समस्या का विस्तार से चित्रण किया गया है, जो तत्कालीन समय का प्रतिबिम्ब है।

संदर्भ :

(1) नागर, अमृतलाल : भूख, पृ. 212

(2) वही, पृ. 156.

(3) वही, पृ. 186.

(4) वही, पृ. 150–51.

(5) वही, पृ. 150–51.

(6) नागर, अमृतलाल : बूंद और समुद्र, पृ. 143.

(7) वही, पृ. 247.

(8) वही, पृ. 247.

(6) वही, पृ. 307.

(10) नागर, अमृतलाल : नाच्यौ बहुत गोपाल, पृ. 229.

(11) शुक्ल, श्रीलाल : सूनी घाटी का सूरज, पृ. 28.

(12) वही, पृ. 98.

(13) शुक्ल, श्रीलाल : सीमाएँ टूटती है, पृ. 25.

(14) राग दरबारी, पृ. 293.